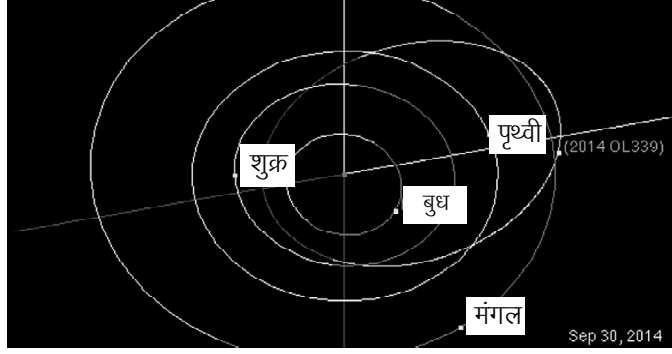


पृथ्वी का एक अनजाना हमसफर

हाल ही में एक नया क्षुद्र ग्रह (एस्टीरॉइड) खोजा गया है जिसे 2014-ओएल-339 नाम दिया गया है। यह पृथ्वी का आंशिक उपग्रह यानी क्वासी सैटेलाइट है। वास्तव में यह एक विशाल



चट्टान है जो परिक्रमा तो सूर्य की करती है मगर हमारे इतने नज़दीक है कि लगता है कि हमारा उपग्रह है।

इस क्षुद्र ग्रह की खोज संयोगवश ही हुई। वैसे यह पृथ्वी के साथ 775 सालों से है और अनुमान है कि 265 साल और साथ निभाएगा। इसकी खोज का श्रेय स्पैन के कंप्लूटेंस विश्वविद्यालय के कार्लोस और राउल डी ला फुएंटे मार्कोस को जाता है।

क्वासी सैटेलाइट पृथ्वी के साथ तालमेल से सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इसके चलते पृथ्वी को यह मौका मिल जाता है कि वह उस सैटेलाइट के मार्ग को प्रभावित कर सके। 2014-ओएल-339 सूर्य की परिक्रमा करने में लगभग 365 दिन लेता है जो पृथ्वी की परिक्रमा अवधि के बराबर है। मगर पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल इसे थोड़ा लड़खड़ाने पर विवश कर देता है जिसकी वजह से ऐसा लगता है कि यह पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है।

2014-ओएल-339 करीब 90 से 200 मीटर व्यास की चट्टान है। यह उन कई ऐसी चट्टानों में से एक है जो

पृथ्वी के साथ तालमेल से सूर्य के चक्कर काट रही है। इनमें से कुछ चट्टानें ऐसी भी हैं जो पृथ्वी के परिक्रमा पथ में उससे आगे या पीछे चलती हैं। इन्हें

ट्रोजन कहते हैं।

दूसरी ओर, लघु चंद्रमा ऐसे छोटे पिंड होते हैं जो अंतरिक्ष में भटकते-भटकते पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में कैद होकर कुछ समय तक उसके साथ-साथ चलने लगते हैं। मगर वे चंद्र महीनों या एकाध साल ही साथ निभाते हैं। ऐसा एक लघु चंद्रमा खोजने का दावा 2002 में पॉल चोडास ने किया था मगर बाद में पता चला था कि वह अपोलो 12 का तीसरा रॉकेट था।

वैसे अधिकांश ग्रहों के साथ ऐसी बारात चलती है। आज तक पृथ्वी के चार क्वासी-सैटेलाइट पता चले हैं। बृहस्पति 6 क्वासी सैटेलाइट के साथ नंबर 1 पर है। वैसे हो सकता है कि बृहस्पति और पृथ्वी के ऐसे कई क्वासी सैटेलाइट हों जिन्हें हम देख नहीं पाए हैं। अंतरिक्ष में चक्कर लगाती इतनी छोटी-छोटी चट्टानों को देखना आसान नहीं है। यह इतना मुश्किल है कि ऐसा पहला क्वासी सैटेलाइट 2004 से पहले नहीं खोजा सका था। (स्रोत फीचर्स)